अंधविश्वास के मकड़जाल में भटकता मानव

''अर्जुनदेव चड्ढा''

आधुनिक ज्ञान विज्ञान के युग में कभी-कभी ऐसी घटनाएं हो जाती हैं जो कि व्यक्ति को सोचने पर मजबूर कर देती हैं कि वह किस युग में जी रहा है। यह घटना राजस्थान के कोटा शहर की है जहां 2012 में भीलवाड़ा से ईलाज के लिए कोटा लाते समय एक महिला का कोटा में निधन हो गया। निधन के एक वर्ष पश्चात पूरा परिवार परिजनों के साथ बस भर कर कोटा आया और महिला की कोटा में जिस स्थान पर मृत्यु हुई वहां कुछ टोने-टोटके करने लगे। लोगों ने पूछा तो उन्होनें बताया कि उनको किसी पण्डित ने कहा है कि घर में जो परेशानियां चल रही हैं उसका कारण मृतका की आत्मा का भटकना है, इसलिए भटकती हुई आत्मा को साथ लेने आए हैं।

यह तो एक उदाहरण मात्र है ऐसी अनेकों घटनाएं, तथ्य विज्ञान और दर्शनशास्त्र के तर्कों से परे प्रतिदिन समाज में देखने तथा सुनने को मिलती हैं। यह देखकर आश्चर्य होता है कि आज के इस वैज्ञानिक युग में भी मानव अंधविश्वासों के घोर अंधेरे में फंसा पड़ा है।

आज भी कुछ स्वार्थी पाखण्डियों द्वारा फैलाये जा रहे मिथ्या प्रचार के कारण शिक्षित होते हुए भी लकीर का फकीर बना हुआ है जबकि धार्मिक ग्रंथ किसी भी प्रकार के टोन-टोटके तथा अंधविश्वास का समर्थन नहीं करते हैं।

वशीकरण, तांत्रिक क्रियाएं, गंडे ताबीज, भूत-प्रेत की कपोल कल्पना, धातु प्लास्टिक से बने यंत्र न जाने अंधविश्वास किन-किन रूप में लोगों के मन में घर किये हुए है।

कुछ चालाक व्यक्ति मानव मन में व्याप्त इसी भय नामक कमजोरी का फायदा उठाकर कभी नारियल को मंत्र से फोड़कर दिखाना, नींबू में खून दिखाना, सफेद सरसों के दानों को काला करना , रंगीन फूलों को रंगहीन कर देना, भभूत प्रकट कर खिलाना,बिना किसी साधन के जल छिड़क कर दीपक जलाना, आत्माओं से बातें करना जैसे माध्यमों से लोगों को भयभीत कर अपना उल्लू सीधा करते नज़र आते हैं।

सबसे बड़ी बात है कि यह सब होता है धर्म के नाम पर। धर्म की आड़ में फल-फूल रहे इस अंधविश्वास के धंधे में कितने ही लोग अपनी जीवन भर की कमाई डुबाते नजर आते हैं। और अंत में मिलता है उन्हें सिर्फ धोखा तथा शारिरिक,मानसिक यत्रणा। जिन शारिरिक व मानसिक परेशानियों से बचने के लिए वे तंत्र-मंत्र के इस मार्ग को चुनते हैं,अंत में स्वयं को ठगा हुआ महसूस करते हुए लुटे-पिटे तथा हताश दिखाई पड़ते हैं। और कई बार स्थिति इतनी विकट हो जाती है कि व्यक्ति को आत्महत्या तक करनी पड़ती है।

इन अंधविश्वासी अनुष्ठानों की मार का सामना सर्वाधिक महिलाओं को करना पड़ता है। कभी भूत-प्रेत, चुड़ैल तथा डायन न जाने कितने रूपों में उन्हें प्रताड़ित होना पड़ता है। यहां तक अनुष्ठानों की आड़ में शारीरिक शोषण का भी सामना करना पड़ता है।

सत्यता तो यह है कि इन सभी अंधविश्वासी कर्मकाण्डों का कोई भी धार्मिक कारण नहीं है। वेद, उपनिषद, दर्शन आदि धर्मशास्त्रों में इन का कोई उल्लेख ही नहीं है। केवल मानव मन में व्याप्त भय तथा

सांसारिक कारणों से जीवन में आने वाली कठिनाईयों का फायदा उठा कर कुछ लोगों ने मनुष्यों के शारीरिक, मानसिक तथा आर्थिक शोषण का एक तंत्र विकसित कर लिया है जिसे चालाकी से धार्मिक रूप दे दिया गया है।

वेद, उपनिषदों तथा दर्शन में किसी भी रूप में आत्माओं के भटकने, उनसे वार्तालाप करने आदि का कोई भी उल्लेख नहीं है। किंतु इन ग्रंथों के ज्ञान से अंजान व्यक्ति केवल धार्मिक अंधविश्वास के नाम पर लुटता चला जाता है।

गीता में स्पष्ट लिखा है कि जैसे व्यक्ति पुराने कपड़े बदलकर नये कपड़े पहन लेता है, उसी प्रकार आत्मा एक शरीर को छोड़कर ईश्वर की व्यवस्था अनुरूप नये शरीर को धारण करती है। आधुनिक विज्ञान भी इसी बात का समर्थक है।

वास्तव में अंधविश्वास के इस धंधे से रोजी रोटी कमाने वाले इन चालाक लोगों ने विज्ञान को ही अपना माध्यम बनाया हुआ है। विज्ञान की रासायनिक क्रियाओं, विधियों का प्रयोग कर ये लोग चमत्कार आदि दिखाकर लोगों के मन में अपनी पैंठ जमा लेते हैं। और बाद में ऐसे लोगों का शोषण करते हैं। उदाहरण के रूप में परमैंगनेट ऑफ पोटास को ग्लिसरीन पर गिरा कर आग प्रकट करना, कटहल के दूध लगे चाकू से नींबू काटने पर खून टपकना दिखाना, नौसादर तथा चूने के मिश्रण को सूंघा कर बेहोशी दूर करना तथा बिच्छू के डंक का उपचार करना। फिटकरी के घोल से पहले लिखना जो दिखाई न दे फिर बाद में उस पर चुकन्दर के रस को प्रयोग कर उसे दिखाना जैसे अनेकों प्रकार के तंत्र-मंत्र , जादू टोने-टोटके के पीछे विज्ञान तथा उसकी विधियां छुपी हुई हैं न कि कोई रहस्यमयी शक्ति।

इसलिए सर्वप्रथम तो मनुष्य का कर्तव्य है कि वह अपने परिवार में दुख-तकलीफ आने पर उसके कारणों को खोज कर निवारण करे। धार्मिक अंधविश्वास से बचे, वेद उपनिषद आदि ग्रन्थों का स्वाध्याय करें। जिससे धर्म का सत्य ज्ञान हो सके तथा यदि कोई चालाक तंत्र मंत्र के नाम पर भोले भाले लोगों को ठग रहा हो तो विज्ञान के माध्यम से बेनकाब करे। क्योंकि वेद कहते हैं ''अंधन्तम प्रतिशन्ति ये अविद्याम् उपासते'' जो अविद्या में घिरे रहते हैं वे ही अंधविश्वास रूपी अंधकार में गिरते हैं इसलिए ज्ञान के माध्यम से समस्याओं का निवारण करे न की तंत्र-मंत्र तथा पाखण्ड से।

स्मरण रहे कि लगभग आठ माह पूर्व भी कोटा के महाराव भीमसिंह अस्पताल में इसी प्रकार के पाखण्ड का पूरा नाटक किया और ढोंगियों ने आत्मा को पकड़ने का दावा किया।

आर्य समाज के जिला प्रधान अर्जुनदेव चढ्डा ने तब और अब हुए इन अंधविश्वासों को समाचार पत्रों में पढ़ा तो उसी6 समय कोटा कलेक्टर को फोन कार ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति न हो का आग्रह किया।

व्यस्त यातायात को रोककर पाखण्डी पाखण्ड करते रहे और आमजन परेशान होता रहा और प्रशासन सोता रहा। शासन-प्रशासन-पुलिस को इस प्रकार के आडम्बरों को तुरन्त रोकने के आदेश जारी करने का निवेदन किया।

जिलाप्रधान आर्य समाज जिला सभा 4-
प-28, विज्ञाननगर, कोटा 324005
(राज.) मो.: 09414187428

राजस्थान पत्रिका

कोटा . गुरुवार
21.02.2013

कोटड़ी चौराहे के निकट करीब एक घंटे चला ड्रामा

अंधविश्वास, आत्मा और जाम

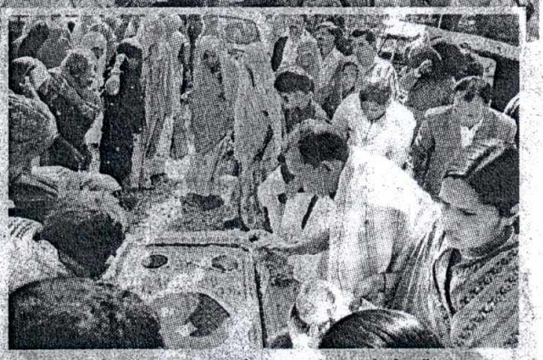

कोटड़ी नहर के निकट बुधवार को पूजा-अर्चना करने के दौरान लगा जाम। (इनसेट में) पूजा-अर्चना करते परिजन। पत्रिका

कोटा. कोटड़ी चौराहे के निकट बुधवार को अंधविश्वास के चलते करीब एक घंटे ऐसा ड्रामा हुआ, जिससे वाहनों का जाम लग गया। इस दौरान जहां लोगों का मजमा लगा रहा, वहीं पुलिसकर्मी इसे मूकदर्शक की तरह देखते रहे। हुआ यूं कि सालभर पहले भीलवाड़ा के जहाजपुर निवासी रतनी बाई नाम की महिला को जब जहाजपुर से परिजन उसे कोटा लेकर आ रहे थे और आते वक्त इसी जगह उसने अंतिम सांस ली थी। उसकी कथित आत्मा को लेने आए परिजनों ने कहा कि मौत के बाद से ही पूरा परिवार परेशान चल रहा था। कई तरह के टोने-टोटके किए, लेकिन फायदा नहीं हुआ। इसके बाद एक पण्डित की सलाह पर मृतका का पूरा परिवार एक बस में भरकर यहां आ गया। नहर के निकट ही इन्होंने पूजा-पाठ शुरू कर दिया। पहले से तंग मार्ग पर इस घटनाक्रम के चलते करीब एक घंटे यातायात बाधित रहा।

जिला आर्य प्रतिनिधि सभा, कोटा

दैनिक
चम्बल संदेश
संस्थापक - स्व. श्री चमन लाल आहूजा
कोटा, गुरुवार, 21 फरवरी 2013

'भटकती आत्मा' लेने पहुंचे परिजन

ऐसे चला 'आत्मा' को ले जाने का कथित जतन

■ कोटड़ी चौराहे के पास एक घंटे तक चला अंधविश्वास का खेल, तमाशबीनों की भीड़

संदेश न्यूज। कोटा.

इसे 'अंधविश्वास' कहें, या व्यक्तिगत सोच, पर आधुनिक दौर में भी लोग 'आत्मा के आने-जाने' जैसी बातों को मान रहे हैं। ऐसा ही वाकया बुधवार को कोटड़ी नहर के पास देखने को मिला, जब एक परिवार उनकी बेटी की 'आत्मा' को लेने के लिए पहुंचा। यह नजारा देख राहगीर भी ठिठक गए और तमाशबीनों की भीड़ जमा हो गई।

प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि दोपहर को कोटड़ी चौराहे के नजदीक नहर के पास कुछ लोग एक पंडित के साथ बैठे थे और सड़क किनारे ज्योत जलाकर पूजा पाठ करने लगे। इस दौरान पंडित कुछ मंत्रोच्चार भी कर रहा था। पूछने पर जहाजपुर निवासी भोजराज मीणा ने बताया कि उनकी बेटी रतनी का एक साल पहले जहाजपुर में एक्सीडेंट हो गया था। उसे कोटा लाकर एमबीएस अस्पताल में भर्ती कराने ले जाते समय कोटड़ी नहर के पास रतनी ने दम तोड़ दिया था। परिवार वालों का कहना है कि रतनी शादीशुदा थी और हादसे के बाद से ही उसकी आत्मा दर दर भटक रही थी। रतनी की आत्मा उसके पति, उसकी बेटी और पिता को परेशान कर रही थी। परिजनों के अनुसार रतनी की आत्मा उनके सपने में आकर उसे जहाजपुर लाकर मुक्ति दिलाने की बात कहती। इस वजह से रतनी के पिता,गांव के उप सरपंच हरलाल समेत परिवार के लोग कोटा पहुंचे और आत्मा को ले जाने लगे। पंडित रामस्वरुप ने तो यहां तक दावा किया कि उन्होंने आत्मा को अपने साथ ले लिया और ले जा रहे हैं।

हो गई जाम की स्थिति

इस कर्मकांड के दौरान मेन रोड पर जाम की स्थिति लग गई। आने जाने वालों ने यहां आत्मा को बुलाने के लिए तंत्र-मंत्र होते देखा तो वे रुक गए और माजरा समझने की कोशिश करने लगे। यातायात को सुचारू करने में पुलिस को भारी मशक्कत करनी पड़ी।

एमबीएस अस्पताल में भी हुआ था ऐसा

जानकारों के मुताबिक एमबीएस अस्पताल में करीब आठ माह पूर्व भी इसी तरह का मामला देखने को मिला था।

> "इसे अंधविश्वास नहीं कह सकते। कई बार ऐसा होता है कि मृत व्यक्ति की आत्मा मुक्ति नहीं होने से घटनास्थल और घर के आस पास भटकती है। आत्मा की मुक्ति आवश्यक होती है।"
>
> आचार्य धीरेन्द्र
> ज्योतिषाचार्य